अध्याय चतुर्थ

प्रदत्तो का विश्लेषण एवं व्याख्या

अध्याय – चतुर्थ

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या शोध प्रक्रिया के आगमन तथा निगमन तर्क के प्रयोग को व्यक्त प्रदत्तों को समूहों में विभाजित कर विश्लेषण तथा अंतिम परिणाम ज्ञात किया जाता है जो नवीन सिद्धांत की खोज अथवा सामान्यीकरण के रूप में होता है। प्रदत्तों के विश्लेषण के अंतर्गत उनकी उपब्धियों की तुलना अनेक परीक्षण द्वारा कर शोध के उद्देश्यों का निर्णय प्राप्त निष्पत्तियों द्वारा किया जाता है।

प्रथम अध्याय में शोध के उद्देश्य द्वितीय अध्याय में संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन तथा तृतीय अध्याय में शोध की प्रविधि का वर्णन किया गया है। प्रस्तुत अध्याय के प्रथम भाग (अ) में गद्य व पद्य पाठ में आये हुये तत्सम तथा तद्भव शब्दों को अलग कर लिखा गया है तथा द्वितीय भाग (ब) में परीक्षण के उपरान्त उचित सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग करके प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। इस शोध अध्ययन में जांच के उपरान्त त्वरित प्रदत्तों के निरंतर प्रस्तुतीकरण के लिए शोध समस्या के अध्ययन से निकले परिणाम की व्याख्या की गई हैं

(अ) तत्सम तथा तद्भव शब्दों का विवरण

हिन्दी भाषा में पाँच प्रकार के शब्द प्राप्त होते हैं– तत्सम, तद्भव, देशी, विदेशी और देशज। बच्चों की उपलब्धि भाषा से होती है। प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक में अध्यायानुसार तत्सम तथा तद्भव शब्दों का विवरण निम्न प्रकार है।

गद्य पाठ– हार की जीत (सुदर्शन)

1. तत्सम (मूल संस्कृत शब्द)

एक, लग् (धातु) लगा, मिलति (धातु)मिलती, दिनरात, न (अव्यय), मिलना, नहीं, रात, आहार, कष्ट, सह (धातु), नहीं, मिलती, जीवन, दुख, दया, चल, स्वागत, कारण, दिना–रात, अवश्य, स्वयं, सुखी, आनंद, ध्यान, बंधन, चल

2. तद्भव (संस्कृत के विकृत रूप)

पार्श्व > पीछा, कृ > कर, तड़ाग > तालाब, श्वस् > सुस्ताना, द्वितीय > दूसरी, भुक् (धातु) > भौकना, द्वौं > दोनों, आत्मनि > अपनी, प्रतिच्छाया > परछाई, पतति > पड़ी, परस्पर > आपस,पूर्वज > पुरखे, ईदृशं > इस तरह, कथ > कहा, त्वं > तुम,इयत् > इतना,वयं > हम,अहम् > मैं, भ्राता > भाई, त्वाम् > तुम्हें, किम् > क्या, खादति > खाते हो, किदृशम् > किस तरह, (प्रा) प्राप्नोति > पाना, कस्मिन् > किसी, भूभुक्षा > भूखे,स्वप > सोना, खाद्यं > खाना, इयत् > इतना, कथ > कहा, अपि > भी, कि +शक् > कर सको, तुभ्यम् > तुमकों,सक् > सकती,आश्चर्य > अचरज, पृच्छ > पूछा,सत्य > सच वद > बताओं, कानि–कानि > कौन–कौन से,कर्म > काम,कि > करना, पालितः > पालतू ,किचित् > कुछ, गृह > घर, सुरक्षा > देख–रेख, कि > करनी, एव > ही, शक > सक, भ्रमण (अट) > भटकता, शरद > सरदी, ग्रीष्म > गरमी,वर्षा >बरसात, प्रा > पाता, इदानीम/अधुना > अब,भूभुक्षा > भूख,वर्षा > बारिश,छत्र, > छत, खाद्यं > खाना, श्रुत्वा (श्रुधातु) > सुनकर, कथ् > कहा, मम > मेरे, सह > साथ, आत्मनः > अपने, कथयित्वा > कहकर, कि > कर, पार्श्वे > पार्श्वे, पिछे–पिछे, गृह > घर प्राप्य > पहुँचकर, खाद्य > झखाना, इतस्ततः > इधर–उधर, घूर्णन > घुमाया, आत्मनः >अपनी,कोष्ठ > कोठरी, दृष्ट्वा > देखकर, किम् > क्या,आत्मसात् > यहां से, न > नहीं, अत्र > यहां, मृ > मर, मन (धातु) > मान, लौह > लोहा, श्रृंखला > सांकल, पृच्छ > पूछा, कदाचित् > कभी–कभी, बद्ध > बांधना, रक्ष > रखते हैं, ग्रीवा झगर्दन,तद > तभी, लोमन > रोओं, कुत्रापि > कहीं, आबद्ध > बांधकर, कथयत् झकहा, माम् > मुझे ,बहु > बहुत, मम > मेरी, ददाति > देते हैं,

अवगाहृयते > नहलाते, दृश > देख,कियत > कितना, श्रु. > सुनी, श्रृंखला > सांकल,तव > तुम्हारा, तुभ्यं > तुम्हें,भाति > भाया, सह > सहन, आत्मनः>अपने

पद्य पाठ – खूनी हस्ताक्षर (गोपाल प्रसाद व्यास)

1. तत्सम शब्द

लहू, विप्लव (युद्ध), स्वाधीनता, युद्ध, अमर, बलिदान, दमन, शोषण, अत्याचार, अंगार, अभिमान, भुजा, संघर्ष, दिन, एक, इतिहास, आकाश, मधुमास, अमर, संघर्ष,गौरव,गान,जन्मा, बलिदान, कान्ति, प्रथम, स्वाधीनता, युद्ध।

2. तद्भव शब्द

सघन > घने, कठोर > कड़ी, धरित्रि > धरती, अग्नि > आग,श्रणु > सुनो, कथ > कह रही है, अद्य > आज, कुक्षी > कोख, वहति > बहती है, मृ > मरती हुई, अधुना पर्यन्त > अभी तक, कृषक > किसान, वस > बसी, धान्य > धान, नवीन > नये, सत्य > सही, परिचय > पहचान, नवीन > नया, अस्माकं > हमारी, अक्षी > ऑख, उदयिष्यति > उगेगा, सूर्य > सूरज, मुष्टी > मुठ्ठी, खण्ड > खण्डहर, नवीन > नया, वय > हमें, इयमेव > यही है, कुक्षी > कोख, अग्निगोलम् > आग का गोला, अपहर > चीर, अंधकार > अंधेरा, तुड़ (धातु) > तोड़ना, कृषक > किसानों की, दह > धधकती, रूदति > रोती है।

इस प्रकार प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक में गद्य पाठ में कुल 27 तत्सम शब्द तथा कुल 106 तद्भव शब्द हैं उसी प्रकार पद्य भाग में कुल 28 तत्सम शब्द व कुल 36 तद्भव शब्द है। इस प्रकार गद्य व पद्य भाग मिलाकर कुल 55 तत्सम शब्द व 142 तद्भव शब्द हैं।

(ब) तत्सम तथा तद्भव शब्दों में छात्रों की उपलब्धि का विवरण –

इस अध्याय का यह दूसरा भाग हैं। इसमें तत्सम तथा तद्भव शब्दों में छात्र–छात्राओं की उपलब्धि को ज्ञात किया गया है । प्राप्त प्रदत्तो को एकत्रित कर उनका स्कोरिंग एवं टेबुलेशन किया गया पूर्णांक–40 था। सर्व-प्रथम सभी उत्तर को

ध्यानपूर्वक जांचा गया सही उत्तर लिखने पर पूर्ण अंक दिये गये। तथा गलत उत्तर देने पर कोई अंक नहीं प्राप्त आंकड़ों का प्रतिशत निकाला। इसका विस्तृत विवरण निम्न है।

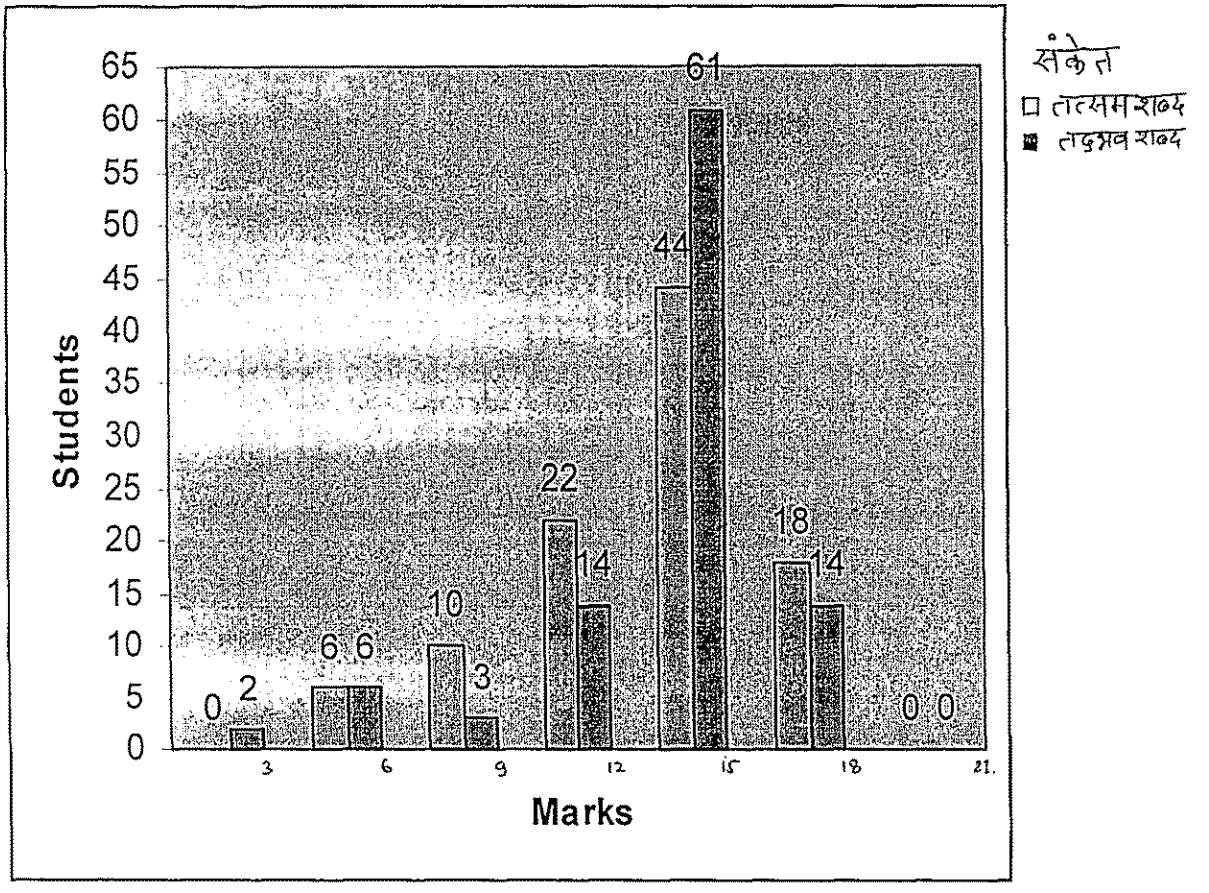

चित्र क.–1

तत्सम व तद्भव शब्दों में छात्र–छात्राओं की उपलब्धि

इसमें तत्सम तथा तद्भव शब्दों में छात्र–छात्राओं की उपलब्धि को दर्शाया है । चित्र के एक्स अक्ष पर 50 शहरी व 50 ग्रामीण छात्र–छात्राओं द्वारा अर्जित अंक है तथा वाय अक्ष पर छात्र–छात्राओं की संख्या है। 12 से अधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र–छात्राओं में 75% तद्भव शब्द को व 62% तत्सम शब्द को जानते है।

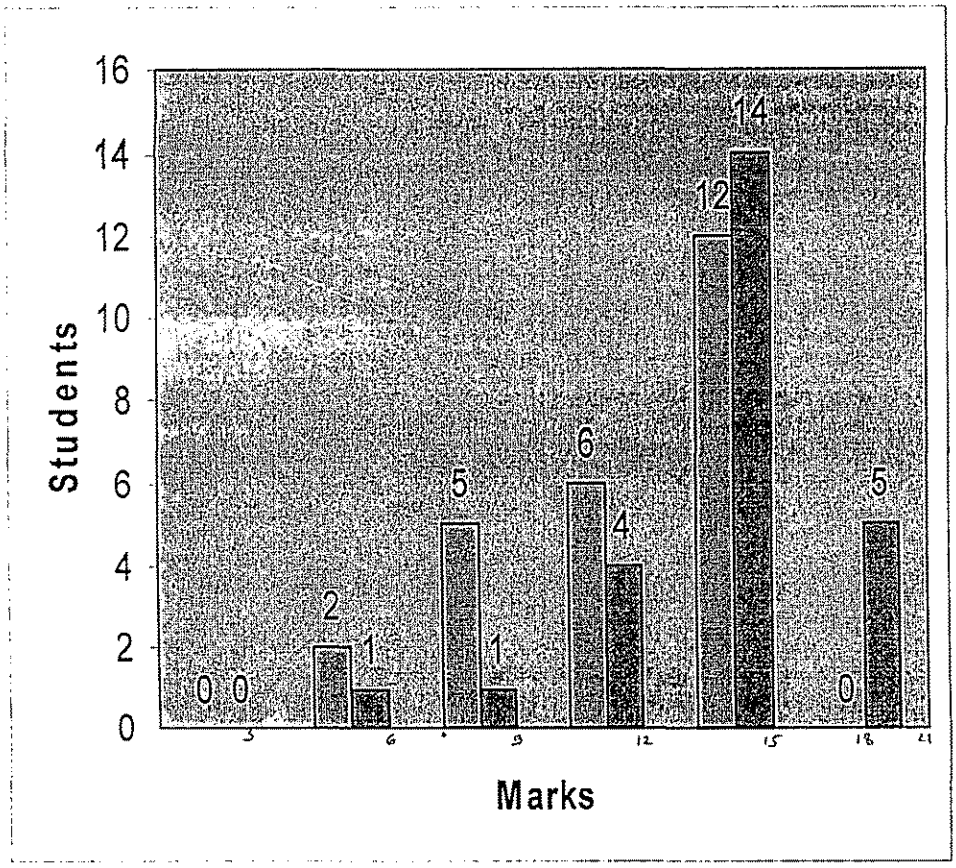

चित्र क.–2

तत्समम शब्दों में ग्रामीण तथा शहरी छात्रों की उपलब्धि

चित्र में ग्रामीण व शहरी छात्रों की तत्सम शब्दों में उपलधि को दर्शाया है। 12 से अधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या 62% है। इन छात्रों में ग्रामीण छात्र 38% तथा शहरी छात्र 24% हैं । ग्रामीण छात्रों को अधिकतम 15 से 18 अंक प्राप्त हुए है जबकि इस वर्ग में एक भी शहरी छात्र नहीं है। उसी प्रकार 3 से 6 अंक प्राप्त करने वाले शहरी छात्र ग्रामीण छात्रों की तुलना में दुगुने है। अतः ग्रामीण छात्रों की उपलब्धि तत्सम शब्दों में अधिक है।

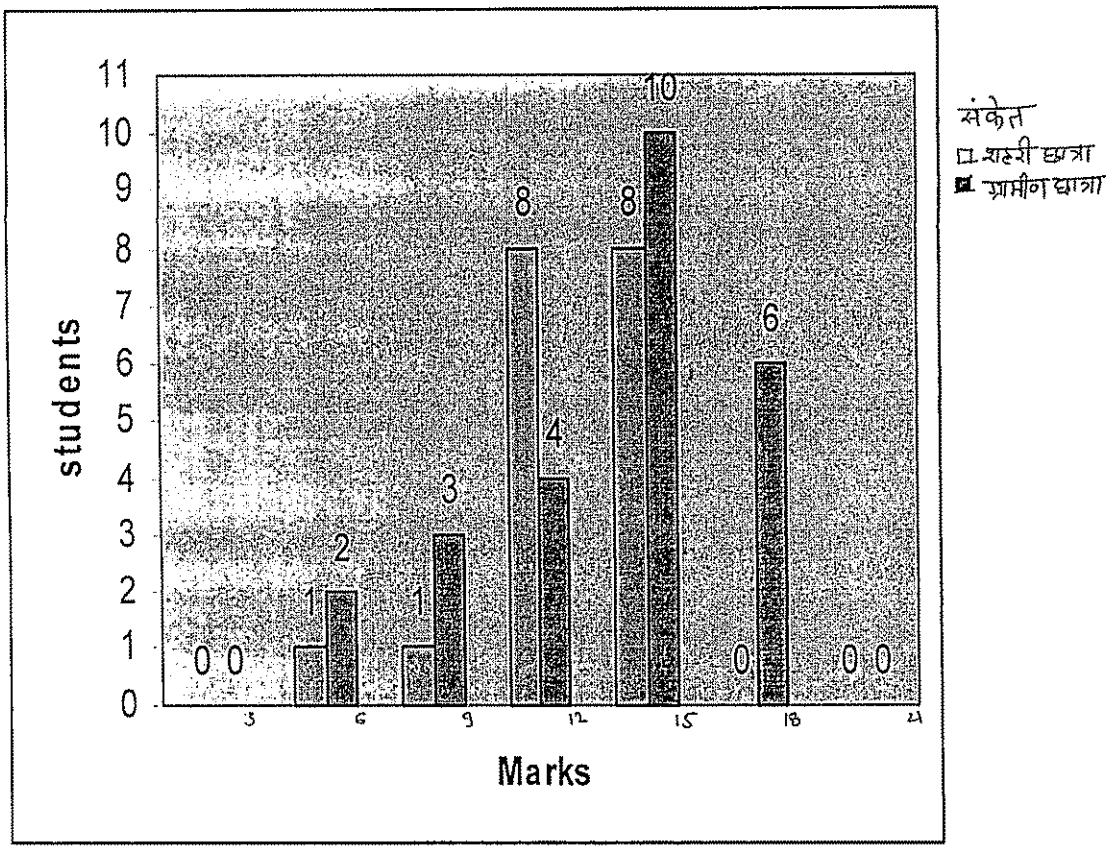

चित्र क.–3

तत्सम शब्दों में ग्रामीण तथा शहरी छात्राओं की उपलब्धि

चित्र में ग्रामीण तथा शहरी छात्राओं की तत्सम शब्दों में उपलब्धि को दर्शाया है। यहॉ 48% छात्राओं को 12 से अधिक अंक प्राप्त हुये है। इनमें 32% छात्राऐं ग्रामीण तथा 16% शहरी छात्राएं है। ग्रामीण छात्राओं को शहरी की तुलना में सर्वाधिक (10 छात्राओं को) 15 से 18 अंक प्राप्त हुए हैं। अतः ग्रामीण छात्राओं की उपलब्धि तत्सम शब्दों में अधिक है।

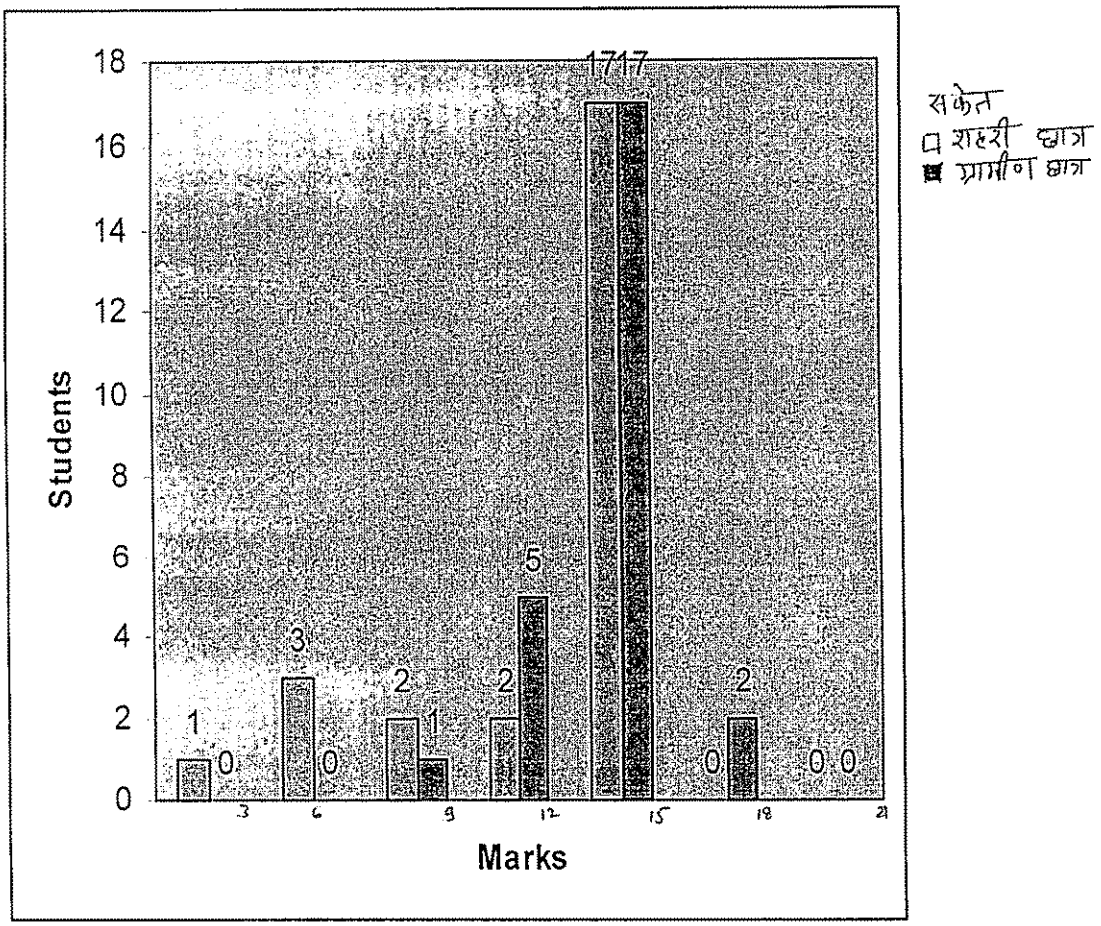

चित्र क्र.–4

तद्भव शब्दों में ग्रामीण तथा शहरी छात्रों की उपलब्धि

चित्र में ग्रामीण तथा शहरी छात्रों की तद्भव शब्दों में उपलब्धि को दर्शाया है। यहाँ 12 से अधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र 72% हैं। इनमें 38% ग्रामीण तथा 34% शहरी छात्र है। 12 से 15 अंक प्राप्त करने वाले शहरी व ग्रामीण छात्रों की संख्या एक समान (17 अंक) है। ग्रामीण तथा शहरी छात्रों का तद्भव शब्दों में ज्ञान एक समान है। चित्र में 15 से 18 अंक ग्रामीण छात्रों को मिले हैं । अतः ग्रामीण तथा शहरी छात्रों की तद्भव शब्दों में उपलब्धि एक समान है।

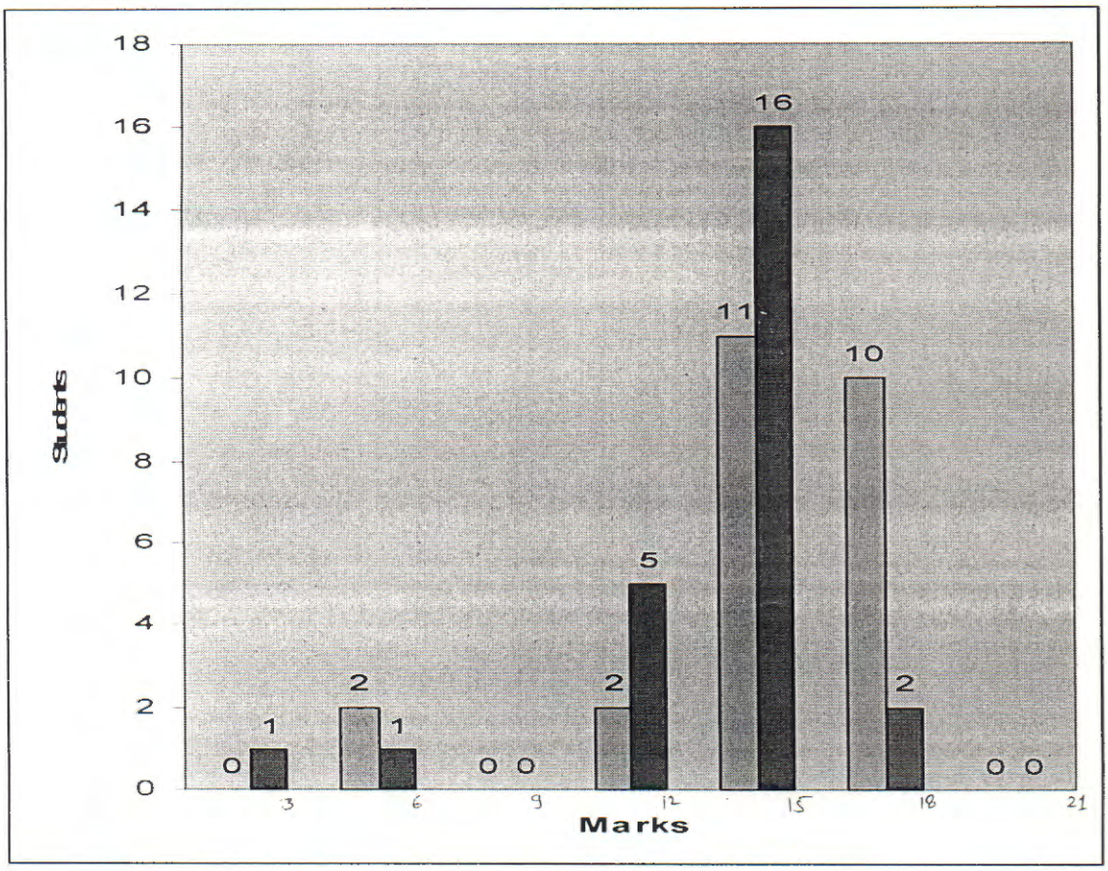

चित्र क.–5

तद्भव शब्दों में ग्रामीण तथा शहरी छात्राओं की उपलब्धि

चित्र में ग्रामीण तथा शहरी छात्राओं की तद्भव शब्दों में उपलब्धि को दर्शाया है। यहाँ 12 से अधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्राऐं 78% है। इसमें 36% ग्रामीण व 42% शहरी छात्राऐं है। स्पष्ट है कि 15 से 18 अंक अधिक शहरी छात्राओं को प्राप्त हुए हैं। अतः शहरी छात्राओं की उपलब्धि तद्भव शब्दों में अधिक है।

————00————